पूर्व प्राथमिक शिक्षा

एक परिचय

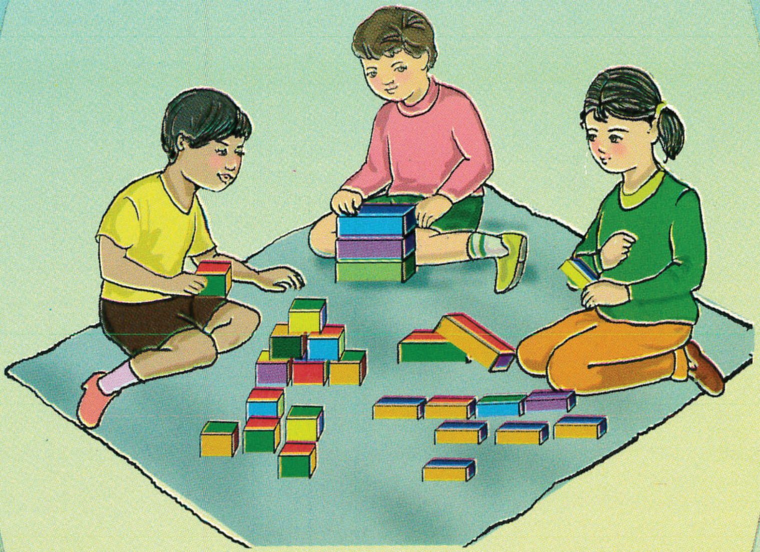

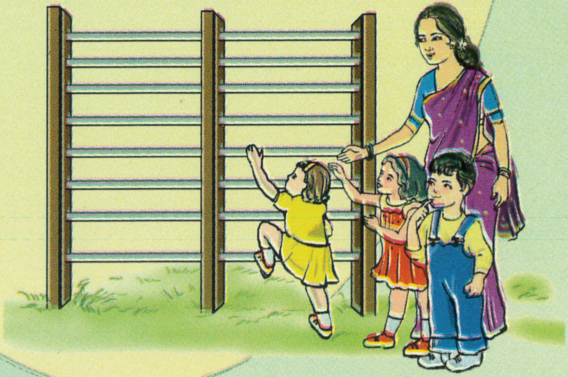

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

पूर्व प्राथमिक शिक्षा

एक परिचय

पूर्व प्राथमिक शिक्षा

एक परिचय

रोमिला सोनी
राजेन्द्र कपूर
कृष्ण कान्त वशिष्ठ

1545

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

मई 2003 माघ 1925

पुर्नमुद्रण

जून 2017 आषाढ़ 1939

मई 2018 ज्येष्ठ 1940

जनवरी 2020 पौष 1941

PD 10T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2003

₹ 45.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा पुष्पक प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, 203-204 डी.एस.आई.डी.सी. शेड्स, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फ़ेज़-I, नयी दिल्ली 110020 द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-147-9

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमित के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमित के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 100 016 **फ़ोन : 011-26562708**

108ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 **फ़ोन : 080-26725740**

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 **फ़ोन : 079-27541446**

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट– धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 **फ़ोन : 033-25530454**

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 **फ़ोन : 0361-2676869**

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*बिबाष कुमार दास*
संपादन	:	*शशि चड्ढा*
उत्पादन सहायक	:	*ओम प्रकाश*

चित्र
वी. मनीषा

आवरण
अमित श्रीवास्तव

प्राक्कथन

बच्चे किसी भी राष्ट्र के महानतम संसाधन स्रोत होते हैं। उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास में परिवार और विद्‌यालय, दोनों की अहम्‌ भूमिका होती है। प्रत्येक समाज बच्चों के लिए यथासंभव अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करता है। शोध परिणामों के आधार पर स्पष्ट है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चों की आगे की शिक्षा और जीवन के लिए एक महत्त्वपूर्ण घटक साबित होती है। इस तथ्य को स्वीकारना होगा कि बच्चों के जीवन के प्रारंभ के 6 वर्ष उनके व्यक्तित्व विकास की अत्यंत नाजुक अवस्था है और इसका असर उनकी बाद की शिक्षा पर होता है। हमारे देश में पूर्व प्राथमिक शिक्षा, विभिन्न रूपों में उपलब्ध है। शहरी क्षेत्रों में इसका संगठित स्वरूप देखने को मिलता है तथा अन्य क्षेत्रों में समेकित बाल विकास योजना के अंतर्गत आंगनवाड़ियां और बालवाड़ियां इस कार्य में सहयोग देती है। प्रायः देखा गया है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा संचालन करने वाले अधिकांश विद्‌यालयों में ऐसे पाठ्‌यक्रम चलाए जा रहे हैं जो बच्चों के विकासात्मक स्तर की तुलना में कहीं अधिक बोझिल होते हैं। अभिभावकगण भी प्रायः चाहते हैं कि उनके बच्चों को अधिक-से-अधिक सिखाया जाए और इस प्रकार पूर्व प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा का निम्नवत्‌ प्रसार मात्र बनकर रह गई है। इस संदर्भ में बाल मनोविज्ञान का अल्प ज्ञान बच्चों पर बढ़ते बोझ का एक कारण माना जा सकता है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्‌ के दस्तावेज *विद्‌यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्‌यचर्या की रूपरेखा – 2000* में 2 वर्ष की शिशु शिक्षा प्रस्तावित की गई है जिसे पूर्व प्राथमिक शिक्षा के रूप में माना गया है। इस बात पर जोर दिया गया है कि इन 2 वर्षों में बच्चों को समूह-गतिविधियों, खेल-खेल में शिक्षा की तकनीकों, भाषा-खेलों, संख्या खेलों आदि द्‌वारा प्रेरित करें। इस प्रकार आनंद, समझ और सहभागिता पर आवश्यक जोर देना होगा। इससे बच्चे सीखने के लिए तैयार होंगे और बच्चों पर से अस्वास्थ्यकर एवं हानिकारक बोझ कम होगा। अतः विषयों के औपचारिक शिक्षण तथा पढ़ने और लिखने पर तो पूर्ण प्रतिबंध होना चाहिए।

अभिभावकों और शिक्षकों के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि वे छोटे बच्चों को शिक्षा बड़ी सावधानी के साथ दें। इस बात की समझ की भी बड़ी आवश्यकता है कि बच्चों को पूर्व प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर क्या सिखाया जाए और क्या नहीं सिखाया

जाए। कई स्थितियों में बच्चों को दो या ढाई वर्ष की अल्पायु में बाल अनुरक्षण केंद्र/पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्रों में सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों के कारण छोड़ देना पड़ता है। जहां तक बच्चों की देखभाल का प्रश्न है वह उनके विकास के क्रम के अनुरूप होना चाहिए और शिक्षा में मात्र तैयारी संबंधी कियाकलाप ही कराए जाने चाहिए।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, पूर्व प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में गत चार दशकों से अनुसंधान कार्य कर रही है, विभिन्न प्रयोग किए गए हैं और उनकी प्रभावकारिता के अध्ययन किए गए हैं। बहुत-सी सामग्री तैयार की गई है और शिक्षकों एवं स्रोत व्यक्तियों को प्रशिक्षण दिया गया हैं। प्राप्त अनुभवों के आधार पर यह माना जाता है कि बच्चों को 3 से 6 वर्ष की आयु के मध्य 2 वर्ष की अवधि की पूर्व प्राथमिक शिक्षा दिया जाना अधिक लाभदायी होता है। इस शिक्षा व्यवस्था को अभिभावकों और शिक्षकों के सम्मुख सही परिप्रेक्ष्य में रखना इस दृष्टि से आवश्यक हो गया है कि जानकारी के अभाव में बच्चों का बचपन उनसे छिनता हुआ प्रतीत होता है और बच्चों को सही शिक्षा उपलब्ध होने में कठिनाई उत्पन्न होती है। प्रस्तुत पुस्तिका पूर्व प्राथमिक शिक्षा और उससे जुड़े मुद्दों पर सम्यक रूप में प्रकाश डालती है और शिक्षकों और अभिभावकों को पूर्व प्राथमिक शिक्षा संबंधी वास्तविक धारणा प्रदान करती है। इस पुस्तिका के विकास हेतु प्रारंभिक शिक्षा विभाग के सदस्य विशेष तत्परता और रुचि के लिए धन्यवाद के पात्र हैं। आशा है कि यह पुस्तिका पूर्व प्राथमिक शिक्षा से जुड़े शिक्षकों और अभिभावकों को सही मार्गदर्शन प्रदान कर सकेगी। पुस्तिका की उपादेयता वृद्धि की दृष्टि से पाठकों के सुझावों का स्वागत किया जाएगा।

जगमोहन सिंह राजपूत
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
2 अक्टूबर 2002

विषय–सूची

प्राक्कथन iii

1. पूर्व प्राथमिक शिक्षा–एक परिप्रेक्ष्य **1**

1.1 पूर्व प्राथमिक शिक्षा–भारतीय संदर्भ

1.2 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) का विचार

1.3 नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या का रूपरेखा

2. पूर्व प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप **6**

2.1 बाल विकास का अर्थ

2.2 पूर्व प्राथमिक शिक्षा का अर्थ

3. पूर्व प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व **12**

3.1 पूर्व प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य

3.2 पूर्व प्राथमिक शिक्षा स्तर के बच्चे की विशेषताएं

4. पूर्व प्राथमिक शिक्षा की विधियां **20**

4.1 पूर्व प्राथमिक शिक्षा में खेल का महत्व

4.2 पूर्व प्राथमिक शिक्षा का कार्यक्रम नियोजन

4.3 पूर्व प्राथमिक शिक्षा में बच्चे का मूल्यांकन

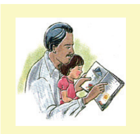

5. पूर्व प्राथमिक शिक्षा में परिवार व शिक्षिका की भूमिका **28**

5.1 गृह-शिक्षक के रूप में अभिभावक

5.2 पूर्व प्राथमिक शिक्षा में शिक्षिका की भूमिका

- *संस्तुतियां* **32**
- *संदर्भ* **35**
- *संलग्निका* **36**

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो. क. गांधी

1

पूर्व प्राथमिक शिक्षा – एक परिप्रेक्ष्य

किसी भी देश का सबसे महत्त्वपूर्ण संसाधन वहां के नागरिक होते हैं। कर्मठ, उत्साही, जागरूक तथा समाज और देश की सेवा के लिए समर्पित नागरिकों के अभाव में समस्त संसाधन व्यर्थ हो जाते हैं। देश की प्रगति के लिए मानव संसाधन के विकास का प्रमुख दायित्व शिक्षा के ऊपर है। यही कारण है कि भारतीय संविधान के नीति-निदेशक तत्त्वों (Directive Principles) की धारा 45 में प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण का लक्ष्य रखा गया था। वर्तमान में 86वें संविधान संशोधन के द्वारा धारा 21A में 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का मौलिक अधिकार प्रदान किया गया है। साथ ही नीति-निदेशक तत्त्वों की धारा 45 में 6 वर्ष तक की आयुवर्ग के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल शिक्षा एवं देखभाल का संकल्प प्रस्थापित किया गया है। विचार-विमर्श तथा शोध अध्ययनों से यह पाया गया कि प्रथम कक्षा में प्रवेश लेने वाले बच्चे प्राथमिक शिक्षा के लिए शारीरिक एवं मानसिक रूप से तैयार नहीं होते। जिस प्रकार जीवन की तैयारी के लिए शिक्षा आवश्यक है, उसी प्रकार शिक्षा की तैयारी के लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा आवश्यक है। यह तथ्य प्रकाश में आते ही लोगों का ध्यान पूर्व प्राथमिक शिक्षा की ओर गया। आज संपूर्ण विश्व में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की व्यापक मांग है।

1.1 पूर्व प्राथमिक शिक्षा – भारतीय संदर्भ

यदि हम पूर्व प्राथमिक शिक्षा के वर्तमान ढांचे को देखें तो पता चलता है कि एक ओर व्यक्तिगत प्रबंधतंत्र द्वारा व्यवसायिक स्तर पर शहरी क्षेत्रों में चलाए जा रहे नर्सरी स्कूलों की भरमार हो गई है और दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों तथा शहर की झुग्गी-बस्ती में रहनेवाले बच्चों के लिए व्यवस्थित और सुनियोजित प्रारंभिक शिक्षा व्यवस्था का पूर्ण अभाव है। नर्सरी स्कूलों में से अधिकतर केवल प्राथमिक स्कूलों का लघु रूप बनकर रह गए हैं, जहां छोटे बच्चों को औपचारिक रूप से पढ़ने-लिखने तथा

गणित की शिक्षा दी जाती है। इस तरह बच्चों पर अनावश्यक बोझ व दबाव पड़ता है। इसके अलावा, कुछ नर्सरी स्कूल, बच्चों को विदेशी सिद्धांतों के आधार पर ऐसी शिक्षा देने का प्रयास करते हैं, जो बच्चों को उनके परिवेश व पृष्ठभूमि से नहीं जोड़ पाती।

अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि इस आयुवर्ग के बच्चों की क्षमता, आवश्यकता तथा ग्रहणशीलता के स्तर को देखते हुए पूर्व प्राथमिक शिक्षा का एक ऐसा कार्यक्रम तैयार किया जाए, जो बच्चे के परिवेश व परिस्थितियों के अनुकूल हो। साथ ही वह उनके विकास को गति प्रदान करे।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा पर बल देने तथा इसके स्तर को ऊंचा उठाने में सुनियोजित कार्यक्रम का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान है, क्योंकि इसके द्वारा बच्चे साक्षरता-पूर्व कौशलों से युक्त हो जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वे आगे की शिक्षा को सरलता से ग्रहण कर पाते हैं।

अंग्रेजी का यह कथन कि "As the twig is bent, so is the tree inclined" अर्थात पौधे का झुकाव जिधर होता है, बड़ा हो कर पेड़ भी उसी ओर झुकता है, इस बात की पुष्टि करता है कि जिन मूल्यों, मनोवृत्तियों, वांछित संस्कारों एवं आदतों का बीजारोपण हम बच्चे में करते हैं, बड़े होने पर उसके व्यक्तित्व में हम उन्हीं का विकसित रूप पाते हैं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा मानव संसाधन विकास की एक आवश्यक शर्त है। अतः पूर्व प्राथमिक शिक्षा के महत्त्व, स्वरूप, क्रियाकलापों और बालक-बालिकाओं पर पड़ने वाले प्रभाव पर विचार करना आवश्यक है।

1.2 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) का विचार

0-8 आयुवर्ग को प्रारंभिक बाल्यावस्था कहते हैं। इसमें शैशव काल, विद्यालय पूर्व और प्रारंभिक प्राथमिक शिक्षा वर्ष आते हैं। भारतीय संदर्भ में **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)** के अनुसार प्रारंभिक बाल्यावस्था का अर्थ 0-6 आयुवर्ग है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पूर्व प्राथमिक शिक्षा को बहुत महत्त्व दिया गया। इसमें प्रारंभिक बाल कार्यक्रम के सभी पहलुओं पर ज़ोर दिया गया। साथ ही इसमें देखभाल अर्थात निगरानी को भी जोड़ा गया,

जिससे अब इसे प्रारंभिक बाल देखभाल और शिक्षा (ECCE) के नाम से जाना जाता है। देखभाल के प्रमुख तत्त्व हैं – स्वास्थ्य और पौष्टिक आहार।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने प्रारंभिक बाल देखभाल और शिक्षा को मानव संसाधन विकास में एक महत्त्वपूर्ण निवेश के रूप में स्वीकार किया है। प्रारंभिक बाल देखभाल और शिक्षा में समुदाय की सहभागिता पर ज़ोर दिया गया है। साथ ही समेकित बाल विकास योजना (ICDS) और प्रारंभिक बाल देखभाल और शिक्षा (ECCE) कार्यक्रमों के सभी स्तरों के समन्वय पर भी बल दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने बहुत कमउम्र के बच्चों के लिए औपचारिक शिक्षा के दबाव (जैसे पढ़ने-लिखने और गणित पढ़ाने) के प्रति चेतावनी दी है। इसमें खेल और क्रियाकलाप की गतिविधियों को अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व दिया गया है। इस नीति में गरीब तबके के बच्चों की देखभाल और प्रोत्साहन पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है।

1.3 नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2000)

नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2000) के अनुसार भी पूर्व प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को विद्यालय के लिए तैयार करना है और इसलिए बाल देखभाल और शिक्षा, शिक्षा का एक प्रमुख तत्त्व है। समेकित बाल विकास योजना के अंतर्गत आंगनबाड़ियों द्वारा शिशु शिक्षा, पूर्व प्राथमिक शिक्षा के रूप में उपलब्ध है। यह अन्य कई रूपों में भी उपलब्ध है, जैसे – तैयारी के विद्यालय, नर्सरी, किंडरगार्टन कक्षाएं आदि, जो सरकारी और निजी, दोनों ही क्षेत्रों में एक-दूसरे से कुछ भिन्न हैं। इस तथ्य को स्वीकारना होगा कि शिक्षा की यह अत्यंत आरंभिक अवस्था बच्चे के व्यक्तित्व-निर्माण की अत्यंत नाजुक अवस्था है और इसका असर बच्चों की बाद की शिक्षा पर होता है। यह संस्तुति की गई है कि दो वर्ष की पूर्व प्राथमिक बाल देखभाल एवं शिक्षा 4 से 6 वर्ष की आयु के (स्थानीय परिवेश के अनुसार उसे 6 वर्ष के मध्य के दो वर्ष) सभी बच्चों को उपलब्ध कराई जाए, जिसमें किसी प्रकार का औपचारिक शिक्षण और मूल्यांकन नहीं होगा और जो स्कूल की तैयारी के लिए अनुभव प्रदान करेगी।

2

पूर्व प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप

2.1 बाल विकास का अर्थ

पूर्व प्राथमिक शिक्षा को समझने के लिए यह आवश्यक है कि बाल विकास के अर्थ को समझा जाए तथा यह भी जाना जाए कि बच्चे से हमारा अभिप्राय क्या है?

बच्चा एक संपूर्ण व्यक्ति है जो सोचने, महसूस करने तथा अलग-अलग प्रकार के व्यवहार करने की क्षमता रखता है। विकास का तात्पर्य स्वभाव, व्यवहार तथा शरीर में होने वाले बदलाव से है। विकास की संपूर्ण प्रक्रिया के द्वारा बच्चा अपने पर्यावरण में रहना तथा समायोजित होना सीखता है।

बाल विकास का अर्थ बच्चों के विकास और बचपन में होने वाले परिवर्तनों से है। कुछ बदलाव ऐसे होते हैं, जिन्हें देखा और मापा जा सकता है तथा कुछ ऐसे, जिन्हें देखना और मापना थोड़ा मुश्किल होता है।

बाल विकास में सामान्यतया जन्म से 12 साल तक की आयु को लिया जाता है। इन 12 वर्षों का विभाजन इस प्रकार है :

- शैशव काल (0-3 वर्ष)
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा काल (4-6 वर्ष)
- प्राथमिक शिक्षा काल (6-12 वर्ष)

बाल विकास के अंतर्गत विकास के निम्न पहलुओं को लिया जाता है :

- शारीरिक विकास
- मानसिक / संज्ञानात्मक / बौद्धिक विकास
- भाषा विकास
- सामाजिक एवं भावनात्मक विकास
- सृजनात्मक विकास
- सौंदर्यबोध विकास

बाल विकास का क्रम निश्चित होता है

विकास एक प्रक्रिया है, जो निरतंर चलती रहती है। विकास की गति आयु के आधार पर तीव्र या धीमी हो सकती है, परंतु यह कभी रुकती नहीं। विकास चरणों में होता है और प्रत्येक चरण का अगले चरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक बच्चा, दूसरे बच्चे से भिन्न होता है। उसकी वृद्धि एवं विकास की अपनी अलग गति होती है। विकास के सभी पहलुओं का परस्पर संबंध होता है। यदि किसी एक विकास में कोई कमी रह जाए तो उसका प्रभाव बच्चे के दूसरे विकास पर अवश्य पड़ेगा। विभिन्न पहलुओं के सही विकास के लिए विशेष कालावधि होती है। इस समय में पर्यावरण एवं अनुभवों का विशेष प्रभाव होता है।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चे का भी विकास क्रम यही होता है। यह बात अलग है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चे का विकास धीमी गति से हो या उसका विकास किसी एक अवस्था में आकर थम जाए, पर क्रम यही रहता है।

जन्म के पश्चात वातावरण का प्रभाव बच्चे के विकास पर बहुत अधिक पड़ता है। पहले जमानें में बच्चे का बोलचाल व व्यवहार माता-पिता, भाई-बहिन और परिवार के अन्य सदस्यों के बीच होता था।

इसलिए बच्चे के विकास, लालन-पालन, व्यवहार एवं संस्कार आदि में संयुक्त परिवारों या बड़े परिवारों का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान होता था।

परिवार के सदस्यों की जिम्मेदारी होती थी – बच्चों की मालिश करना, उनको नहलाना, लोरियां एवं कहानियां सुनाना, जिसके द्वारा बच्चों में उचित नैतिक मूल्यों का विकास हो सके। थोड़े बड़े या लगभग 3 वर्ष का होने पर बच्चे अपने दैनिक कार्यों के प्रति सजग हो जाते थे।

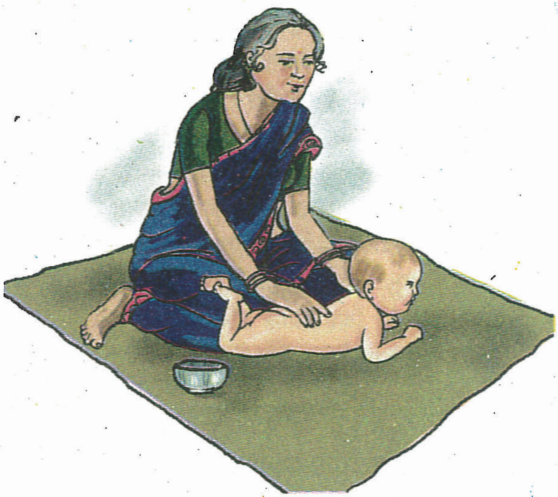

वे अपनों से बड़ों के व्यवहार का अनुकरण करके सीखते थे, इसीलिए पहले समय में 3-6 वर्ष के बच्चों के लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा का महत्त्व संस्थाओं के माध्यम से इतना अधिक नहीं था, जितना आजकल के सीमित परिवारों की परिस्थितियों में है। इसके कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार हैं :

- शोध परिणामों के अनुसार पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्राप्त बच्चों को प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करने में सुगमता होती है और शिक्षा का पूरा लाभ लेकर व्यक्तित्व का वांछित विकास करनें में मदद मिलती है।
- संयुक्त परिवार बड़ी तेजी से विघटित हो रहे हैं। संयुक्त परिवार के विघटन से दादा-दादी तथा अन्य सहयोगी भी माता-पिता का विकल्प बनकर बच्चों की देखभाल नहीं कर सकते।

- माता-पिता आजीविका कमाने के लिए अधिकतर समय घर से बाहर रहते हैं।
- आज की जीवन-शैली में तनाव बढ़ता जा रहा है।
- अड़ोस-पड़ोस का पर्यावरण भी उतना अच्छा नहीं रह गया है, क्योंकि संस्कारों एवं मानवीय मूल्यों का ह्रास बहुत तेज़ी से हो रहा है।
- औद्योगीकरण के कारण परिवार आजीविका हेतु नगरों में आकर बस गए हैं।
- कामकाजी माताओं की संख्या में दिनोंदिन वृद्धि हो रही है।

इन्हीं सब कारणों की वजह से पूर्व प्राथमिक शिक्षा का महत्त्व और भी बढ़ गया है।

2.2 पूर्व प्राथमिक शिक्षा का अर्थ

पूर्व प्राथमिक शिक्षा एक बाल-केंद्रित कार्यक्रम है, जिसमें बच्चे खेल द्वारा ही सबसे अधिक सीखते हैं। खेल बच्चों के सर्वांगीण विकास में अमूल्य योगदान करता है। विकास की दृष्टि से विद्यालय-पूर्व स्तर के बच्चे अपने प्रत्यक्ष अनुभवों द्वारा सर्वाधिक सीखते हैं।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के स्वरूप को रेखांकित करने के लिए निम्नांकित विशेषताएं विचारणीय हैं :

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा 4-6 वर्ष के बच्चों के लिए है। (स्थानीय परिवेश के अनुसार 3 से 6 वर्ष के मध्य के दो वर्ष की होनी चाहिए।)
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चों के सर्वांगीण विकास अर्थात भाषायी, शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक विकास के लिए उत्प्रेरक वातावरण प्रदान करती है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चों को प्राथमिक/औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार करती है, किंतु पूर्व प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा का लघु रूप नहीं है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम है, जो बच्चों को पढ़ने-लिखने व गणित सीखने के लिए तैयार करता है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा बच्चों को प्रत्यक्ष अनुभव दिए जाते हैं, जिससे उनमें सीखने की प्रक्रिया से संबंधित कौशलों का विकास हो सके।

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अनुभव बच्चों में आत्मविश्वास पैदा करते हैं, जिसके फलस्वरूप बच्चों में आंतरिक अनुशासन बढ़ता है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कार्यक्रम योजना परिवर्तनशील व लचीली होती है, जिसे बच्चों की रुचि, आयु व स्तर को ध्यान में रखकर बनाया जाता है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम है, जो सामूहिक क्रियाकलाप के लिए प्रोत्साहित करता है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा, परीक्षा उन्मुख कार्यक्रम नहीं है, जिसमें जो कुछ बच्चे सीखते हैं, उसके अंतिम परिणाम पर बल दिया जाए।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा, 4-6 वर्ष की अवस्था के बच्चे की विशेषताओं को समझने तथा उन्हें और अधिक पनपने का अवसर देता है।

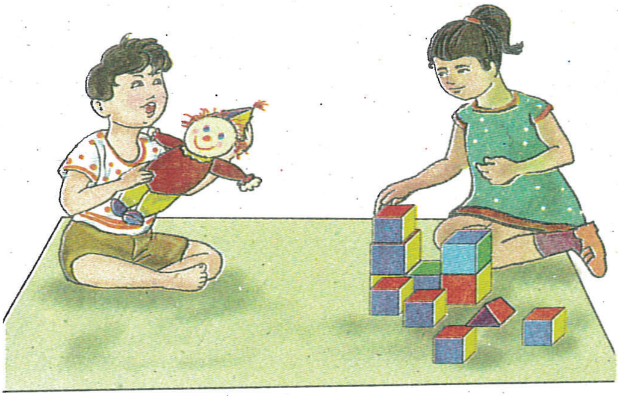

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा, प्रत्येक बच्चे के महत्त्व को समझने के लिए प्रेरित करता है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा, बालक-बालिका, दोनों के लिए समान रूप से लाभकारी है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा, बच्चों में सदगुणों का विकास कर, उन्हें समाजोपयोगी नागरिक बनने में मदद करती है।

3

पूर्व प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्त्व

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों ने इस बात की पुष्टि की है कि 0-6 वर्ष की आयु में बच्चों के विकास की गति तीव्र होती है तथा यही आयु संस्कारों के निर्माण के लिए सबसे उपयुक्त होती है। यदि बच्चे के सर्वांगीण विकास में इस अवस्था का सदुपयोग न किया जाए तो उसकी क्षतिपूर्ति कभी नहीं हो पाती। इस अवस्था में बच्चों की देखरेख तथा शिक्षा पर ध्यान देने से ही भविष्य में देश को सुयोग्य एवं कर्मठ नागरिक मिल सकते हैं। ऐसी परिस्थितियों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा (4-6 वर्ष) की आवश्यकता स्वाभाविक है। विभिन्न शोधों से प्राप्त निष्कर्ष निम्न बातों का संकेत करते हैं, जिन्हें हम तीन भागों में बांट सकते हैं :

पूर्व प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता

- 4-6 वर्ष के बच्चों के लिए (स्थानीय परिवेश के अनुसार 3 से 6 वर्ष के मध्य के दो वर्ष)
- प्राथमिक शिक्षा में योगदान के लिए
- अभिभावकों व समुदाय के लिए

4-6 वर्ष के बच्चों के लिए

- हमारे देश में बच्चों की एक बड़ी संख्या शिक्षा प्राप्त करने वाली प्रथम पीढ़ी की श्रेणी में आती है। परिवार में समृद्ध एवं उपयुक्त शैक्षिक वातावरण न होने से बच्चों को समुचित देखरेख और मार्गदर्शन मिल पाना संभव नहीं होता, बल्कि बहुत-सी गलत बातों को सीख लेने की

संभावना भी रहती है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा में स्वच्छता और स्वस्थ आदतों के विकास पर बहुत अधिक बल दिया जाता है, क्योंकि 4-6 वर्ष की अवस्था सबसे अधिक संवेदनशील होती है अतः इस समय सीखी हुई आदतें प्रायः स्थायी होती हैं। स्वच्छता और स्वस्थ आदतें इस आयु में अच्छी प्रकार से सिखाई जा सकती हैं।

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत रोचक, मनोरंजक तथा उद्देश्यपूर्ण खेल-क्रियाओं के माध्यम से बच्चों में अच्छी आदतों एवं नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है। इस प्रकार उनके विकास को उचित दिशा मिल सकती है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा बच्चों को विकासोन्मुख और समृद्ध वातावरण दे सकते हैं।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा शैक्षिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए परिवारों के बच्चों के विकास को भी गति मिल सकती है।
- रोचक एवं शिक्षाप्रद खेल-क्रियाओं के माध्यम से शुरू करके पूर्व-प्राथमिक शिक्षा, बच्चों में शिक्षा के प्रति रुचि को उत्पन्न करती है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चों में सुरक्षा व आत्मविश्वास की भावना का विकास करने में सहायता करती है।
- छोटे बच्चों के बहुत से दोष/बीमारियां यदि शुरू में पता चल जाएं, तो उनका इलाज होना सरल हो जाता है। यह केवल पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा ही संभव है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के माध्यम से बच्चों में छिपी प्रतिभाओं और कौशलों को उभारने में सहायता मिलती है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चे के संपूर्ण जीवन की तैयारी है।

प्राथमिक शिक्षा में योगदान के लिए

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार किया जा सकता है, क्योंकि प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश लेने वाले बच्चे शारीरिक, मानसिक और भाषायी विकास की दृष्टि से प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार नहीं होते।
- कई परिवारों में लड़कियों को विद्यालय जाने से रोक दिया जाता है, क्योंकि उन्हें अपने छोटे भाई-बहिनों की देखभाल करने के लिए घर पर ही रहना पड़ता है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्रों के खुल जाने से उनके छोटे भाई-बहिनों की शिक्षा की व्यवस्था हो जाती है और ये लड़कियां प्राथमिक विद्यालय जा सकती हैं।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा 'बालिका-शिक्षा' के प्रसार को बढ़ावा देकर शिक्षा के सार्वजनीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।
- जिन बच्चों को उचित पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्राप्त हो जाती है, उनके विद्यालय में नामांकन और ठहराव की संभावना बढ़ जाती है।
- प्रारंभिक वर्षों में मिले उचित मार्ग-दर्शन से बच्चे के विकास व उसकी क्षमताओं को विकसित करने में सहायता मिलती है तथा प्राथमिक विद्यालय में बच्चे उचित रूप से समायोजन कर सकने में समर्थ होते हैं।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्राप्त बच्चे दूसरे बच्चों की अपेक्षा सरलता से सीख पाते हैं। उनकी शैक्षणिक उपलब्धि बढ़ जाती है तथा फेल होने की संभावना न के बराबर होती है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा 4-6 वर्ष के बच्चों की शिक्षा के प्रति अभिभावकों और समुदाय को जागरूक बनाती है।

अभिभावकों व समुदाय के लिए

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम माता-पिता के सर्वप्रथम शिक्षक होने के दायित्व को बल देती है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत अभिभावकों को अच्छी पूर्व प्राथमिक शिक्षा के महत्त्व व विधि की जानकारी दी जाती है।

- अभिभावकों को ऐसी जानकारी देना, जिसके द्वारा वे घर पर बच्चों में वांछनीय मूल्यों, संस्कारों व शिक्षा में सहायक गतिविधियां कराने में समर्थ हो सकें।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम अभिभावकों को बच्चों के हित में उचित निर्णय लेने की योग्यता, नवीन कौशलों को सीखने की योग्यता के लिए प्रोत्साहित करता है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में अभिभावकों की सहभागिता केवल गुणात्मक सुधार लाने के लिए ही नहीं, बल्कि केंद्र संचालन, संसाधन जुटाना, एवं बच्चों की प्रगति का मूल्याकंन करने की क्षमता के लिए भी आवश्यक है।
- बच्चों की औपचारिक शिक्षा (पढ़ना, लिखना व गणित) तथा शैक्षणिक भार को कम करने के लिए अभिभावक महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा अभिभावकों को यह समझाने में मदद करती है कि औपचारिक शिक्षा (3 Rs) पर जोर देना इस अवस्था में बच्चों के विकास के लिए हानिकारक हो सकता है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम बच्चों के लिए कार्य करनेवाली स्वयंसेवी एवं सरकारी संस्थाओं, कार्यकर्ताओं, अभिभावकों एवं समुदाय को एक-जुट हो कर प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होता है।

संक्षेप में, यह कार्यक्रम जीवनपर्यंत सीखने के लिए उत्तम नींव प्रदान करता है। इसीलिए यदि बच्चा बाद के वर्षों में अच्छे परिणाम प्रदर्शित करता है, तो शुरू में इस कार्यक्रम पर किया गया यह व्यय (खर्च) बहुत ही महत्त्वपूर्ण निवेश है।

3.1 पूर्व प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य

- बच्चे में स्वस्थ आदतों का विकास और व्यक्तिगत समायोजन के लिए प्रमुख आवश्यक कौशलों का विकास, जैसे – कपड़े पहनना, भोजन करना, सफाई आदि।
- इसके द्वारा बच्चों में वांछित सामाजिक दृष्टिकोणों का विकास होता है, जिससे बच्चे खेलकूद और विभिन्न क्रियाओं में सहभागिता

कर सकें तथा दूसरों के अधिकारों और विशेषाधिकारों के प्रति संवेदनशील बन सकें।

- अपने विचारों, भावनाओं तथा संवेगों को व्यक्त करने, समझने, स्वीकार करने तथा नियंत्रित करने में बच्चे की सहायता करके उसमें भावनात्मक/संवेगात्मक परिपक्वता लाना।
- बच्चों में सौंदर्यबोध की भावना को बढ़ावा देना।
- बच्चे में जिज्ञासा जागृत करना तथा जिस वातावरण में वह रहता है, उसे समझने में मदद करना। बच्चे को भ्रमण, खोज तथा प्रयोग करने के अवसर देकर उसमें नवीन रुचियां जागृत करना।
- आत्माभिव्यक्ति के अवसर देकर बच्चे में स्वतंत्रता तथा सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करना।
- अपने विचारों और भावनाओं को प्रवाह, स्पष्टता एवं शुद्धता के साथ व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।

3.2 पूर्व प्राथमिक शिक्षा स्तर के बच्चे की विशेषताएं

- हर बच्चा विशिष्ट होता है।
- बच्चे के विकास का एक निर्धारित क्रम होता है।
- बच्चे के विकास पर उसके वंशानुक्रम, वातावरण एवं पालन-पोषण का प्रभाव पड़ता है।
- बच्चा बार-बार अभ्यास करके सीखता है।

- बच्चा आत्मकेंद्रित होता है तथा वह हर वस्तु को अपने ही दृष्टिकोण से देखता है।
- बच्चों में भिन्नता होती है। प्रत्येक बच्चे को अपनी शैली से सीखने के अधिकार को स्वीकार करना चाहिए।
- बच्चा अधिकतर अनुकरण द्वारा सीखता है।
- बच्चा अत्यंत क्रियाशील होता है।
- वह प्रशंसा व प्रोत्साहन चाहता हैं।
- सीखने के अवसर एवं प्रोत्साहन बच्चे को प्रेरित करते हैं।
- सीखने के लिए उनमें स्वाभाविक जिज्ञासा एवं उत्सुकता होती है और वे नवीन वस्तुओं में रुचि लेते हैं।

- उनमें अप्रत्यक्ष चिंतन शक्ति विकसित नहीं होती, अतः वे प्रत्यक्ष वस्तुओं और अनुभवों से ही सीखते हैं।

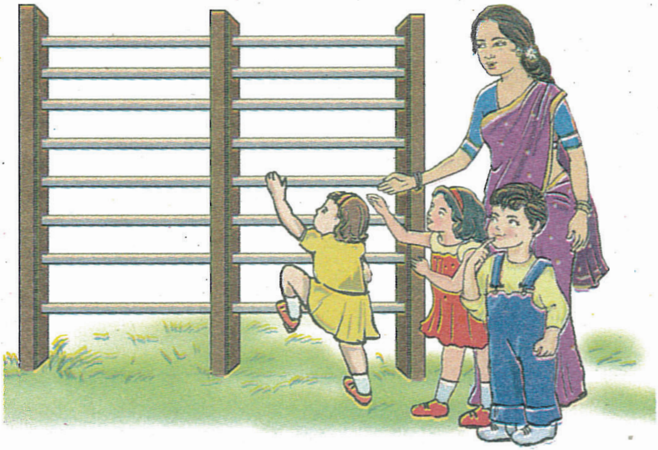

- बच्चों का विकास अपने पर्यावरण की सक्रिय खोज करने तथा उसका विविध प्रकार से प्रयोग करने से होता है, रटने से नहीं। वे क्रिया तथा खेल के माध्यम से ही सबसे अच्छी तरह सीख पाते हैं।
- उनका ध्यान-विस्तार बहुत कम होता है अर्थात वे किसी एक क्रिया पर अधिक समय तक ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते।
- वे अधिक समय तक चुपचाप नहीं बैठ पाते, क्योंकि इस आयु में शारीरिक रूप से क्रियाशील एवं गतिशील होते हैं।
- बड़े समूह में क्रियाकलाप करने के वे आदी नहीं होते, अतः छोटे समूहों में क्रियाकलाप में अधिक रुचि लेते हैं और उनसे लाभ भी उठाते हैं।
- वे पुनरावृत्ति पसंद करते हैं।

4

पूर्व प्राथमिक शिक्षा की विधियां

पूर्व प्राथमिक शिक्षा 4-6 आयुवर्ग के बच्चों की विशेषताओं के आधार पर निश्चित रूप से खेल-विधि (Play-way method) से दी जानेवाली शिक्षा है अर्थात खेल और क्रियाकलाप पर आधारित शिक्षा है, जिनमें निम्न खेल एवं क्रियाकलाप बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं :

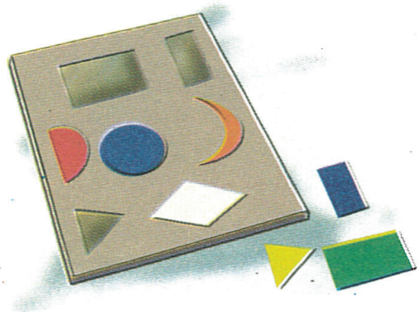

- खेल
- शिशुगीत
- कहानी
- वार्तालाप
- कठपुतली खेल
- गुड़िया का खेल
- प्रयोग

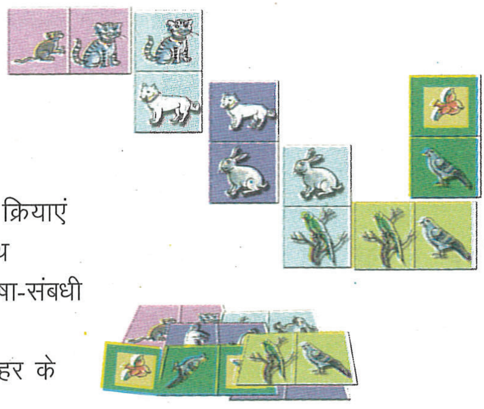

- अभिनय
- प्रकृति में विचरण
- संगीत व लयात्मक क्रियाएं
- खेल-सामग्री के साथ संज्ञानात्मक एवं भाषा-संबधी क्रियाएं
- कक्षा के अंदर व बाहर के खेल

4.1 पूर्व प्राथमिक शिक्षा में खेल का महत्त्व

- खेल विधि मुख्य रूप से बाल-केंद्रित (child-centered) विधि है, जिसमें बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, रुचियों तथा क्षमताओं को ध्यान में रखा जाता है।
- खेलना बच्चों की स्वाभाविक प्रकृति है। खेल का मैदान हो, घर हो, बाज़ार हो, या अन्य कोई स्थान, बच्चे चुपचाप नहीं बैठ सकते। जो कुछ भी उनके हाथ लगता है, चाहे वह पत्थर हो, पत्ता हो या तिनका हो, वे उसे उठाकर खेलने लगते हैं। खेल उन्हें बहुत प्रिय होता है और खेलने में उन्हें बहुत आनंद आता है।

प्रायः लोगों की यह धारणा है कि खेलने से समय नष्ट होता है। माता-पिता इस बात से डरते हैं कि खेल में बच्चे लड़ेंगे-झगड़ेंगे। खेलने से क्या फायदा? कुछ लिखेंगे-पढ़ेंगे तो कुछ सीखेंगे भी। यह सोचकर बच्चों को खेलने के अवसर कम देते हैं। वास्तव में, बच्चों के काम और खेल अलग नहीं हैं। बचपन में खेल ही उनके सीखने का एकमात्र साधन है। खेल के माध्यम से बच्चे अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं, साथ ही खेल के माध्यम से अपने आसपास के संसार को देख और समझ सकते हैं। इससे बच्चों को अपने सामाजिक संबंधों एवं स्वस्थ आदतों को विकसित करने में भी सहायता मिलती है। इस प्रकार बच्चे के सभी पक्षों के विकास में सहायक होने के कारण खेल का बहुत अधिक महत्त्व है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा देने के लिए खेल एक प्रभावी साधन है, क्योंकि खेल से बच्चे जल्दी और अच्छा सीखते हैं। खेल-खेल में प्राप्त ज्ञान सुदृढ़ होता है।

- खेल बच्चों की पांचों इंद्रियों को विकसित करने में सहायक होते हैं।
- खेल द्वारा बच्चे अपनी ज्ञानेंद्रियों और कर्मेंद्रियों – दोनों का उपयोग करते हैं, उनकी मांस-पेशियां दृढ़ होती हैं, समझ बढ़ती है, आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।

- खेल के माध्यम से बच्चे ठोस अधिगम-अनुभव प्राप्त करते हैं। संपूर्ण अधिगम प्रक्रिया में बच्चा एक निष्क्रिय प्राप्तकर्ता मात्र न रहकर स्वयं सक्रिय रूप से कर के सीखने (Learning by doing) की क्रिया में भाग लेता है।
- खेल एक संतुलित क्रिया-प्रधान कार्यक्रम है, जिससे समस्त विकासात्मक उददेश्यों की पूर्ति होती है। खेल बच्चों की अधिगम दक्षताओं, जैसे – निरीक्षण, प्रयोग, समस्या-समाधान तथा सृजनात्मकता के विकास का पोषण करता है।
- खेल बच्चे के मानसिक और शारीरिक संतुलन बनाए रखने में भी सहायक होता है।
- खेल-क्रियाओं द्वारा बच्चों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के भीतर ही उनकी क्षमताओं और रुचियों को ध्यान में रखकर, उनका समुचित विकास किया जा सकता है।

जो बच्चे खेलते नहीं और जिन्हें उत्प्रेरण नहीं दिया जाता, उनका विकास मंद गति से होता है। खेल और प्रोत्साहन से वंचित बच्चों का विकास ठीक प्रकार से नहीं हो पाता।

4.2 पूर्व प्राथमिक शिक्षा का कार्यक्रम नियोजन

बच्चों की आवश्यकताएं, आयु, स्तर, रुचियां एवं अभिरुचियां ही पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम का आधार होनी चाहिए।

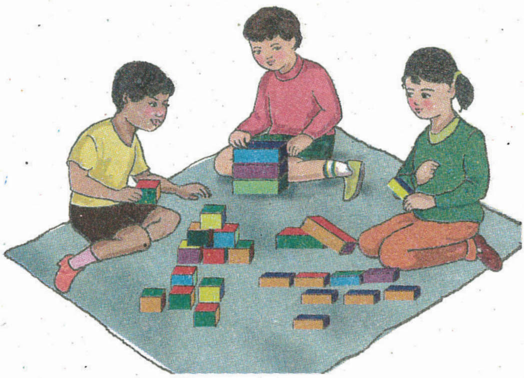

पूर्व प्राथमिक शिक्षा का नियोजन लंबी एवं छोटी, दोनों अवधि के लिए किया जाना चाहिए। लंबी अवधि के लिए नियोजन से तात्पर्य सालभर की योजना बनाने से है। इसे बनाते समय बच्चों का विकासात्मक स्तर, सामाजिक परिप्रेक्ष्य, सांस्कृतिक मान्यताएं एवं स्थानीय लोगों की विशेष आवश्यकताओं को दृष्टि में रखना चाहिए। तत्पश्चात, सालभर की योजना के आधार पर छोटी अवधि के लिए नियोजन करना चाहिए। छोटी

अवधि के लिए नियोजन का अभिप्राय साप्ताहिक योजना बनाने से है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक दिन की क्रियाओं और उसके आयोजन का विवरण हो।

साल भर की योजना शैक्षिक सत्र के आरंभ में ही तैयार कर ली जानी चाहिए, जबकि साप्ताहिक योजना अगला सप्ताह शुरू होने से पहले तैयार की जानी चाहिए। यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह नियोजन पूर्व प्राथमिक शिक्षा के उददेश्यों की प्राप्ति में सहायक हो।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए निम्नलिखित आयामों को ध्यान में रखना आवश्यक है :

- व्यक्तिगत, सामाजिक और संवेगात्मक विकास
- शारीरिक और गत्यात्मक विकास
- संज्ञानात्मक विकास
- भाषा विकास
- सृजनात्मक अभिव्यक्ति और सौंदर्यानुभूति का विकास

शिक्षिका/कार्यकर्मी को एक दैनिक संतुलित कार्यक्रम बनाना चाहिए जिसमें उपरोक्त सभी आयामों से संबंधित खेल-क्रियाएं समाहित हों। इसके लिए समेकित प्रणाली का उपयोग करना वांछनीय है।

विषय-आधारित साप्ताहिक योजना

कार्यक्रम योजना के अंतर्गत किसी मुख्य विषय का चुनाव करके विभिन्न क्रियाकलाप आयोजित किए जाते हैं। बच्चों की आयु, स्तर एवं परिवेश के आधार पर मुख्य विषय का चुनाव किया जाना चाहिए। ये विषय – परिवार, जानवर, फल-फूल, सब्जियां, पेड़-पौधे, घर, हवा, स्वच्छता, त्योहार आदि हो सकते हैं।

एक विषय से संबंधित क्रियाकलाप एक सप्ताह या दो सप्ताह तक कराए जा सकते हैं। (यह विषय के विस्तार पर निर्भर करता है।) जहां तक संभव हो, प्रतिदिन के क्रियाकलाप उस विषय से संबंधित होने चाहिए।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के लिए आवश्यक खेल-सामग्री

बच्चे क्रियाशील होते हैं। वे कुछ-न-कुछ करते रहना चाहते हैं। इसी से वे विविध अनुभव प्राप्त करते हैं। इसके लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्रों में विभिन्न प्रकार की खेल-सामग्री की आवश्यकता होती है। बालकेंद्रित व

आनंददायी शिक्षण विधियां तथा रोचक क्रियाकलाप सामग्री, विद्यालय के वातावरण को आकर्षक एवं रुचिकर बनाती हैं और बच्चों के नामांकन, ठहराव तथा प्रतिधारण क्षमता में वृद्धि करती है। उपयोगी खेलों व क्रियाओं की व्यवस्था करने के लिए महंगी सामग्री की आवश्यकता नहीं है। परंतु क्रियाकलाप को प्रभावशाली बनाने के लिए कुछ साधारण उपकरण व सामग्री होना जरूरी है। कुछ आवश्यक खेल सामग्री, जैसे :

- छोटी-बड़ी गेंद

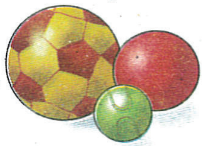

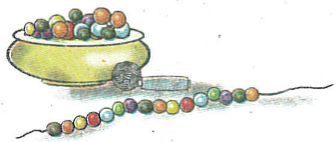

- रंगीन मनके, पिरोने के लिए धागा
- पुराने टायर
- झूले
- संतुलन बनाए रखने के लिए उपकरण
- ब्लाक्स

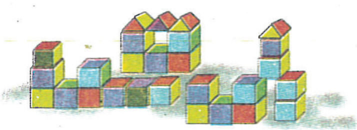

- डोमिनोज
- फ्लैश कार्ड्स

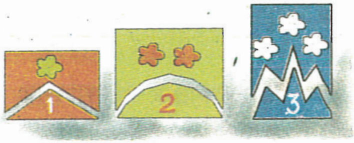

- कठपुतलियां
- विषय-संबधी सामग्री
- शिशु गीतों और कहानियों का संकलन

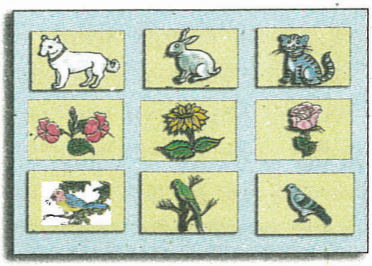

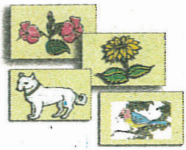

- गुड़िया घर
- पजल्स आदि।

हमारे खेल-खिलौने, गीतों तथा कहानियों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत अधिगम के लिए आधार प्रदान कर सकते हैं।

आस-पास के परिवेश में उपलब्ध सामग्री का प्रयोग करके आकर्षक खेल-सामग्री बनाई जा सकती है, जैसे – मिट्टी, पत्ते, फूल और अन्य

प्राकृतिक वस्तुएं। वस्तुएं जिन्हें आप स्वयं बटोर कर खेल-सामग्री बना सकते हैं, जैसे – पुराने डिब्बे, कागज़, दियासलाई की खाली डिब्बियां, कपड़े के टुकड़े, आदि।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में आसपास के पर्यावरण एवं प्रतिदिन के जीवन की उपयोगी जानकारी का समावेश होना चाहिए।

सीखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने व निरंतरता के लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा के आयोजन तथा घर के वातावरण के बीच जुड़ाव होना बहुत ज़रूरी है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा में बच्चों के व्यक्तित्व को कृत्रिम बनाने के बजाय उसकी स्वाभाविकता को बनाए रखने पर अधिक ज़ोर देने की जरूरत है। संक्षेप में, कार्यक्रम योजना का आधार सामाजिक समन्वय एवं एकता या एकात्मकता के साथ-साथ भौतिक एवं भावनात्मक जुड़ाव होना चाहिए।

4.3 पूर्व प्राथमिक शिक्षा में बच्चे का मूल्यांकन

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम पाठ्यक्रम केंदित न होकर विकासोन्मुख होता है, अतः विकासात्मक उद्देश्यों के संदर्भ में शिशु का सतत अनौपचारिक मूल्यांकन करते रहना अत्यंत आवश्यक है।
- शिशु का मूल्यांकन व्यक्तिगत होना चाहिए तथा विकास के हर पक्ष का मूल्यांकन होना चाहिए, जैसे – सामाजिक, संवेगात्मक, शारीरिक, संज्ञानात्मक और भाषा का विकास।
- निरंतर मूल्यांकन मुख्य रूप से बच्चे के व्यवहार तथा विभिन्न खेल क्रियाओं के समय उसकी प्रतिक्रियाओं का निरीक्षण करके होना चाहिए, जैसे – पहेलियों के द्वारा, निर्देशित भाषायी एवं संज्ञानात्मक क्रियाओं, खेलों आदि के द्वारा। साढ़े चार से छह वर्ष के बच्चों के लिए अभ्यास शीट भी तैयार की जा सकती है।
- इस आयु स्तर के बच्चों को पढ़ने, लिखने व गणित का औपचारिक शिक्षण नहीं कराया जाता, अतः उनका मूल्यांकन प्रमुख रूप से अवलोकन पर आधारित है। उनके व्यवहारगत परिवर्तनों का, अभिरुचियों के परिमार्जन और कौशलों के विकास का अवलोकन है।

- निरंतर मूल्यांकन के अतिरिक्त प्रत्येक सत्र में भी बच्चों का मूल्यांकन होना चाहिए। प्रत्येक सत्र के प्रगति पत्र को अभिभावकों को दिखाकर उनसे बच्चों के संबंध में परामर्श करना चाहिए।
- प्रत्येक सत्र का मूल्यांकन निर्धारित उद्देश्यों तथा उनकी पूर्ति के लिए किए गए कार्यक्रमों पर आधारित होना चाहिए।
- सतत मूल्यांकन द्वारा उन बच्चों का पता लगाना चाहिए, जिनकी विशेष आवश्यकताएं हों। आवश्यकतानुसार बच्चों को छोटे समूहों में बांटकर कुछ बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है। छोटे समूह की क्रियाओं में इन बच्चों को अपनी गति से सीखने और प्रगति करने का अवसर मिलता है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही शिक्षिका को उनके लिए क्रियाओं की योजना बनानी चाहिए।

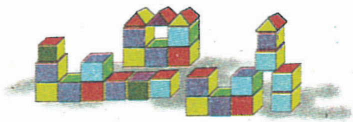

5

पूर्व प्राथमिक शिक्षा में परिवार व शिक्षिका की भूमिका

बच्चे के विकास में उद्दीपन का विशेष महत्त्व है। यहां उद्दीपन से तात्पर्य है– प्रेरणा। बच्चा उचित अवसरों को पाकर कुछ क्रिया-प्रतिक्रिया करता है। इस क्रिया-प्रतिक्रिया से वह सीखता है और सीखने से उसके विकास को एक गति मिलती है। जीवन में बच्चे का पहला संपर्क अपने माता-पिता के साथ होता है। बच्चे का अधिकतर समय परिवार के साथ व्यतीत होता है। यह तो माता-पिता का फर्ज़ है कि वे बच्चे का पालन-पोषण करें, किंतु पालन-पोषण केवल पौष्टिक भोजन और साफ़-सुथरे कपड़ों तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। अकसर माता-पिता यह भूल जाते हैं कि बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में उनकी एक और भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

5.1 गृह-शिक्षक के रूप में अभिभावक

कुछ युवा माता-पिता प्रारंभिक बाल्यावस्था की उत्प्रेरक गतिविधियों की महत्ता व प्रासंगिकता को नहीं मानते, तो कुछ माता-पिता उन्हें यांत्रिक रूप से प्रयोग में लाते हैं, तो कुछ को इनका ज्ञान ही नहीं होता और वे बच्चों को घर पर अनावश्यक औपचारिक शिक्षा के बोझ तले दबा देते हैं।

वर्षों से सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण भारतीय माताएं अपने पुरातन संस्कारों को छोड़ती जा रही हैं। इसकी वजह संयुक्त परिवारों का विघटन तथा नौकरी की तलाश में मूल स्थान छोड़ना आदि है। परिणामस्वरूप बच्चों के पालन-पोषण के परंपरागत तरीके तेजी से बदलते जा रहे हैं। अब पुराने खेल, गीत, कहानियां, घरेलू खिलौने जो बच्चों के माता-पिता तथा घर के बड़े-बूढ़े, दादा-दादी आदि उपयोग में लाते थे, उनका उपयोग लगभग समाप्त होता जा रहा है।

संयुक्त परिवार से एक और लाभ भी था – परिवार में सगे संबंधियों के बच्चे भी होते थे। सब मिलकर खाते-पीते, खेलते और एक-दूसरे से

सीखते (Peer-learning) भी थे। आज के छोटे (लघु) परिवार में इन सबकी कोई संभावना नहीं।

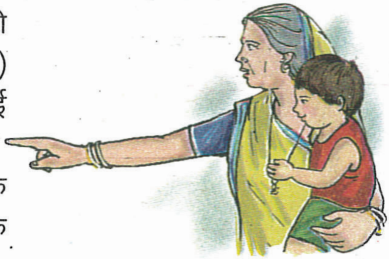

अभिभावकों को चाहिए कि अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से प्राप्त बाल विकास संबंधित खेल, क्रियाकलाप, कहानियां और गीतों का प्रयोग बच्चे के साथ करें। बच्चा प्रतिदिन परिवार के सदस्यों के साथ अनेक प्रकार की पारस्परिक क्रियाएं करके अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा प्राप्त करता है।

माता-पिता अगर बच्चे को उसके हाल पर छोड़ दें तो बच्चा अपने वातावरण में जो कुछ देखेगा, सही या गलत, उसे अपना लेगा, क्योंकि उसमें अभी इन दोनों में अंतर करने की क्षमता का अभाव होता है। परंतु माता-पिता जब घर में एक प्रेमपूर्ण सीखने का वातावरण बनाते हैं, तो बच्चों के भीतर सुरक्षा और जिज्ञासा की भावना पैदा होती है। अतः शिक्षिका तथा माता-पिता को मिलकर यह प्रयास करना चाहिए कि बच्चा सीख सके और आगे बढ़ सके। माता-पिता की सहभागिता से अभिप्राय है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा के नियोजन और क्रियान्वयन में वे आगे बढ़कर शिक्षिका की सहायता करें और बच्चे के अभिभावक की भूमिका को अधिक सफलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से निभाएं। आजकल नर्सरी में दाखिले के लिए भी छोटे बच्चों की प्रवेश परीक्षा ली जाती है। नर्सरी में प्रवेश के बाद 'थ्री आर्स' सीखने पर विशेष बल दिया जाता है। इस तरह के तरीके प्रयोग करने से बच्चे तो बोझ तले दबे ही रहते हैं, माता-पिता भी दबाव में रहते हैं। बच्चे के जीवन को उपयुक्त सांचे में ढालने के लिए शिक्षक एवं माता-पिता की अहम् भूमिका है। माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चे पर अनावश्यक दबाव न ड़ालें, बल्कि उनके साथ खेलें। खेल-खेल में ही बच्चे बहुत कुछ सीखते जाते हैं। साथ ही माता-पिता को चाहिए कि वे शिशु उद्दीपन की पर्याप्त जानकारी प्राप्त करके बच्चों का उद्दीपन सार्थक एवं प्रभावशाली बनाएं।

बच्चे को प्रोत्साहित व प्रेरित करने के लिए माता-पिता को घर पर निम्नलिखित बातों पर अवश्य ध्यान देना चाहिए :

- बच्चे के साथ गुणात्मक समय (quality time) बिताएं।
- बच्चे के साथ बातें करें। बच्चे को अधिक से अधिक बोलने का अवसर दें।
- बच्चे को प्यार और सुरक्षा की भावना दें।
- बच्चे को गीत, कविता और कहानियां सुनाएं और सुनें।
- बच्चे के साथ उसका साथी बनकर खेलें।
- उन्हें उचित मार्गदर्शन दें।
- बच्चे को अधिक रोकें-टोकें नहीं।
- बच्चे की बात धैर्य से सुनें।
- बच्चे को खिलौने और उसके स्तर की चित्र-पुस्तकें दें।
- बच्चे को घर के बाहर घुमाने ले जाएं और आस-पास की चीज़ों के बारे में बातचीत करें। बच्चों के चारों तरफ के वातावरण में जो परिवर्तन हो रहा है, उनकी तरफ उसका ध्यान दिलाएं।
- बच्चे की तुलना दूसरे बच्चों के साथ न करें। हर बच्चे की क्षमता भिन्न होती है।
- क्रियाकलाप व खेल बच्चे की आयु, स्तर और क्षमता के अनुसार दें।
- क्रियाकलाप/खेल/खिलौने ऐसे हों, जो बच्चे के विकास की दृष्टि से उपयोगी हों।
- आपका व्यवहार ऐसा हो कि बच्चा उसका अनुकरण करे।
- बच्चे के प्रश्नों के उत्तर दें और उसमें खोजबीन की आदत डालें। बार-बार प्रश्न पूछने पर उसे डांटिए नहीं।
- घर का वातावरण तनाव से मुक्त रखें, ताकि बच्चा सुरक्षित महसूस करे।
- बच्चों को अपने-आप अनुभव करने का मौका दें, क्योंकि वे स्वयं चीजों को छूकर, सूंघकर, चखकर, ध्यानपूर्वक देखकर, सीखना चाहते हैं।

क्रियाकलापों व खेलों से बच्चे को माता-पिता व घर के अन्य वयस्कों के साथ रहने एवं आदान-प्रदान के अधिक अवसर मिलते हैं। बड़े लोगों

के साथ अर्थपूर्ण समय (quality time) बिताने से बच्चे को निम्नलिखित लाभ होते हैं –

- बच्चे में सुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है।
- बच्चे को अपने अस्तित्व का बोध होता है।
- सबके साथ सामंजस्य स्थापित करना सीखता है।
- दूसरों के प्रति विश्वास की भावना जाग्रत होती है।
- उसमें आत्मविश्वास की भावना सबल होती है।
- आत्माभिव्यक्ति के अवसर मिलते हैं।
- बच्चे में उत्सुकता और उत्साह की वृद्धि होती है।
- सोचने-समझने, कल्पना आदि के अवसर मिलते हैं।
- और अधिक जानने तथा सीखने की जिज्ञासा बढ़ जाती है।
- अपने वातावरण के प्रति आकर्षण बढ़ता है।
- अन्य लोगों के प्रति संवेदनशील हो जाता है।

- माता-पिता व अन्य वयस्कों द्वारा पौराणिक कथाएं (जैसे – रामायण, महाभारत एवं जातक कथाएं) और पंचतंत्र की कथाएं (पशु-पक्षियों की कहानियां) आदि सुनकर नैतिक मूल्यों एवं अच्छे विचारों का निर्माण होता है। माता-पिता को चाहिए कि इन कथाओं से रोचक

प्रसंग लेकर सरल भाषा में सुनाएं। समय का अभाव होने पर भी माता-पिता का यह कर्त्तव्य है कि वे समय निकालकर बच्चों को कहानी अवश्य सुनाएं, क्योंकि कहानी सुनने से बच्चों को आनंद मिलता है, उनकी कल्पनाशक्ति का विकास होता है, उनका ज्ञान बढ़ता है और वे नए-नए शब्द भी सीखते हैं। इसके अतिरिक्त उनकी पुस्तकों के प्रति रुचि भी विकसित होती है।

जब माता-पिता या कोई भी परिवार का सदस्य बच्चों के साथ मिलकर गाता और खेलता है, तो बच्चे उन्हें अपने नज़दीक पाकर बहुत खुश होते हैं। वे अपने को सुरक्षित महसूस करते हैं। लेकिन आजकल जीवन की गति इतनी तेज़ हो गई है कि माता-पिता को बच्चों के साथ गाने व खेलने का समय कम ही मिल पाता है। जीवन की व्यस्तता के कारण हम इन प्रचलित परंपरागत गीतों को भूलते जा रहे हैं। माता-पिता को इन्हें फिर से बच्चों के जीवन में लाने का प्रयास करना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह हैं कि व्यस्त होने के बावजूद समय निकालकर अपने प्रांत में प्रचलित परंपरागत गीतों, खेलों को बच्चों के साथ अवश्य खेलें, क्योंकि अच्छे संस्कारों की नींव माता-पिता द्वारा ही पड़ती है।

यदि बच्चे को प्रारंभिक वर्षों में पर्याप्त भोजन, प्रेम और उत्प्रेरणा मिले, तो उसका प्रभाव उसके भावी जीवन और शिक्षा पर पड़ेगा। साथ ही स्वस्थ एवं उत्पादक जीवन-कला के वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने में उसे अवश्य सहायता मिलेगी।

- उचित खेल-क्रियाओं द्वारा माता-पिता और बच्चे एक-दूसरे को ठीक से समझ सकते हैं।
- अगर माता-पिता बच्चे को आसपास के वातावरण को समझने में सहायता दें, तो बच्चे का सामान्य ज्ञान बढ़ेगा और शुरू से ही बच्चे के प्रश्नों का तर्कपूर्ण या सही उत्तर दें, तो उसका दृष्टिकोण वैज्ञानिक बनेगा।
- समुचित उद्दीपन क्रियाओं के माध्यम से शिशुओं में जिज्ञासा प्रवृत्ति जागृत की जा सकती है।

5.2 पूर्व प्राथमिक शिक्षा में शिक्षिका की भूमिका

पूर्व प्राथमिक शिक्षा में केंद्र-बिंदु बच्चा है और शिक्षिका उसकी पथ-प्रदर्शिका है। प्रांरभिक बाल शिक्षा केंद्र में आने वाला बच्चा अपने घर की सुरक्षा तथा घर से प्राप्त होनेवाली मान्यताओं को छोड़कर आता है, इसीलिए केंद्र पर उसे लगभग वैसी ही सुरक्षा तथा मान्यताएं मिलना बहुत आवश्यक है तभी वह केंद्र में आसानी से घुल-मिल पाएगा, खुश रहेगा और उसका उचित विकास होगा। इसलिए शिक्षिका का दायित्व है कि वह :

- सहनशील रहें।
- बच्चों को मां का प्यार दें, तभी बच्चे केंद्र में मां की अनुपस्थिति में भी सुरक्षित महसूस करेंगे।

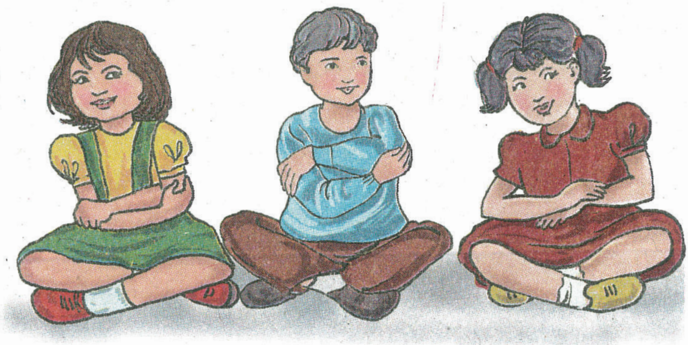

- संस्कृति के संपोषण तथा संप्रेषण के लिए भाषा, मूल माध्यमों में से एक है। बच्चों तथा अभिभावकों में विश्वास की भावना जागृत करने के लिए उनकी मातृभाषा में बात करना अत्यंत प्रभावकारी है।
- विभिन्न स्थानीय सामग्रियों/वस्तुओं द्वारा अधिगम के लिए वातावरण तैयार करें।
- हमारी भावनाएं, हमारे विश्वास एवं मूल्यों से प्रभावित होती हैं। अपनी भावनाओं को बच्चे पर थोपे नहीं, अपितु बच्चे की योग्यता एवं क्षमता में विश्वास करे तथा आगे बढ़ने में उसकी सहायता करें।
- बच्चों को समाधान ढूंढने के अवसर प्रदान करें और उसे अपनी गति से सीखने दें।
- बच्चे को किसी भी ऐसे नाम से न बुलाएं, जिससे बच्चे के प्रति आपके विश्वास में कमी झलकती हो।
- बच्चों के समक्ष बातचीत के आदर्श तरीके प्रस्तुत करे।
- बच्चों का सम्मान करे। इससे उनमें आत्मसम्मान का विकास होता है।
- हतोत्साहित करनेवाले शब्दों व व्यवहार का प्रयोग न करें।
- बच्चा जैसा है, उसे वैसा ही स्वीकारें।
- बच्चे को अपनी क्षमताओं का पता चलने दें, उसके प्रयासों को प्रोत्साहन दें और संप्राप्ति पर उसकी सराहना करें।
- बच्चे की गलतिया ढूंढ़ने के स्थान पर उसकी क्षमताओं, योग्यताओं एवं सामर्थ्य पर ध्यान दें।
- बच्चे के सही कार्य करने पर, चाहे वह छोटा-सा ही क्यों न हो, उसकी प्रशंसा करें।
- बच्चे को सही और गलत का अंतर सिखाएं। शिष्टाचार तथा स्वस्थ आदतों के विकास में बच्चे में सही और गलत का ज्ञान होना आवश्यक है।

संस्तुतियां

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा के पूर्व की शिक्षा के रूप में स्वीकार करते हुए प्रत्येक प्राथमिक शिक्षा केंद्र में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था को अनिवार्य करना चाहिए।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए इस क्षेत्र में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- (क) पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्रों तथा प्राथमिक विद्यालयों में सामंजस्य (जुड़ाव) होना चाहिए।

  (ख) पूर्व प्राथमिक शिक्षा व प्राथमिक शिक्षा से संबंधित सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिशु-उद्दीपन का तत्त्व जोड़ा जाए।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में संदर्भ साहित्य तथा प्रशिक्षण सामग्री की कमी है, जिसका विकास किया जाना आवश्यक है।
- सीधे कक्षा 1 में प्रवेश लेने वाले प्रत्येक बच्चे को विद्यालयोन्मुखी (School Readiness) कार्यक्रम का लाभ मिलना चाहिए। 'स्कूल रेडिनेस' को कक्षा 1 के पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग भी बनाना चाहिए।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा एक विशिष्ट प्रकार की शिक्षा है, जिसका स्वरूप अन्य स्तरों पर दी जानेवाली शिक्षा से भिन्न है। इसीलिए इसे अधिक प्रभावी और गतिशील बनाने के लिए निम्नलिखित संगठन/संस्थाएं/विभागों को सक्रिय सहयोग देना चाहिए :
  - ग्राम शिक्षा समिति
  - नर्सरी स्कूल
  - महिला मंडल
  - सामाजिक कार्यकर्ता
  - अभिभावक/समुदाय-संपर्क कार्यक्रम

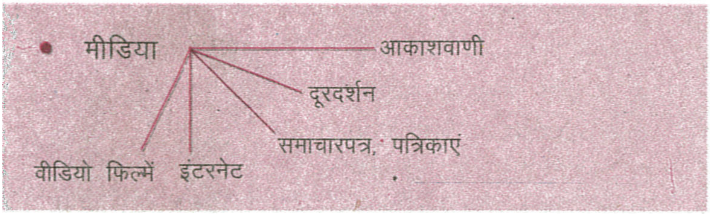

अन्य माध्यमों जैसे – चार्ट्स, पोस्टर्स, नुक्कड़ नाटक आदि का प्रयोग भी किया जाना चाहिए।

- तीन-चार वर्ष की कोमल आयु में नर्सरी में दाखिले के लिए बच्चों की प्रवेश परीक्षा ली जाती है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा का प्रारंभिक बिंदु है। पूर्व प्राथमिक कक्षा में प्रवेश लेने वाले बच्चे से किसी भी पूर्व ज्ञान की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। अतः इतने छोटे बच्चों की प्रवेश परीक्षा नहीं लेनी चाहिए।
- नर्सरी में प्रवेश के बाद 'थ्री आर्स' (3 Rs- Reading, Writing Arithematic) सीखने पर विशेष बल दिया जाता है। जबकि इतने छोटे बच्चों को हमें 'पढ़नें', 'लिखने' व 'गणित' सीखने के लिए तैयार करना चाहिए, उदाहरण के लिए लिखना शुरू करने से पहले हमें बच्चों को लिखने की तैयारी के लिए क्रियाएं करानी चाहिएं जैसे – मोती पिरोना, बिंदु से बिंदु जोड़ना, आड़ी-तिरछी रेखाएं खींचना। पूर्व प्राथमिक शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा का लघु रूप (downward extension) समझकर बच्चों को इस स्तर पर पढ़ाने, लिखाने एवं गणित सिखाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। बच्चे जिज्ञासु एवं खोजी प्रवृत्ति के होते हैं, अतः उन्हें ऐसा अनुकूल वातावरण दिया जाना चाहिए, जिसमें वे विविध प्रकार के अनुभव स्वयं प्राप्त कर सकें तथा उनमें सही संबंधों का निर्माण हो सके।

- इतने छोटे बच्चों को गृहकार्य करने को दिया जाना उचित नहीं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य स्कूल वातावरण को आनंददायक एवं रुचिकर बनाना है, 'थ्री आर्स' (पढ़ना, लिखना, गणित) को महत्त्व देना नहीं है, अतः गृहकार्य नहीं दिया जाना चाहिए।
- प्रायः यह पाया गया है कि बहुत-से नर्सरी स्कूल शिशु-शिक्षा का कार्यक्रम मनमाने ढंग से चलाते हैं। पढ़ने-लिखने व गणित का विधिवत शिक्षण दिया जाता है, जो बच्चों को लाभ पहुंचाने के स्थान पर हानि पहुंचाता है। इस संबंध में कानून बनना चाहिए कि वही व्यक्ति नर्सरी कक्षा में सिखा सकता है, जो पूर्व प्राथमिक शिक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुका है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में संदर्भ साहित्य, प्रचार साहित्य तथा शिक्षण सामग्री की आवश्यकता होती है। एक ऐसी किट तैयार करनी चाहिए, जिसमें सर्वांगीण विकास के सभी पक्षों से संबंधित खेल-सामग्री हो। किट का मूल्य निर्धारित करके उसे सबके लिए सुलभ कराया जाना चाहिए।
- कार्यक्रम में एकरूपता लाने के लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा का एक वार्षिक एवं दैनिक कार्यक्रम तैयार किया जाए, जिस पर सभी शिशु शिक्षा संस्थान अमल करें।

- पूर्व प्राथमिक शिक्षण विधियों का प्रयोग कक्षा 1 और 2 में भी किया जाना चाहिए।
- कक्षा 1, 2 के शिक्षकों को भी बालकेंद्रित तथा रोचक शिक्षण विधियों में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

संदर्भ

- मुरलीधरन *आर. शिशु उद्‌दीपन के लिए प्रेरक क्रियाएं।*
- *पूर्व प्राथमिक शिक्षा मार्गदर्शिका.* 1992. राज्य शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 तथा संशोधित संस्करण,* 1992।
- *विद्‌यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्‌यचर्या की रूपरेखा,* 2000 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- JACQUES DELORS.1996. *Learning : The Treasure Within* (Report to UNESCO of the International Commission on Education for the Twenty-first Century). pp121-122 *Early Childhood Education.* (from Basic Education to University) (Chapter - 6).
- *Education for All.* 2000. (Assessment India). NIEPA and Government of India. *EFA in India : An Analysis.* 2000. pp 25-26.
- KAUL VENITA. 1996. *Early Childhood Education.* National Council of Educational Research and Training.
- KAUL VENITA. 2000. *Education for All* Assessment *Early Childhood Care and Education.* (Section IV) *Emerging Issues in ECE* pp 27-28. (Section II) *ECCE in India : The Journey from Pre School to ECD.* pp11- 16.
- KAUL VENITA, AMBASHT N.K., VASHISHTHA K.K. 2001. *Orientation on Appraisal - Supervision. Planning for Elementary Education: Linkages between Pre-Primary, Primary and Upper Primary Stages of Education. A Report.* (Sarva Shiksha Abhiyan).
- SWAMINATHAN MINA. *The First Three Years.* National Council of Educational Research and Training.
- THAKKAR ARUNA. *Significance of Early Childhood Education ECE Instrumental Material Series.* National Council of Educational Research and Training.

संलग्निका

- **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005**
  राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के अनुसार गुणवत्ता अपने आप में व्यवस्था की ही विशेषता है न कि किसी निर्देश या युक्ति या फिर किसी उपलब्धि विशेष का कोई चारित्रिक लक्षण है। इस संदर्भ में एक और बात ध्यान देने वाली है कि यह योग्यताओं/सक्षमताओं का मापन भर नहीं है। इसके साथ कुछ मूल्य भी जुड़े हुए हैं। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के प्रयास तभी सफल होंगे जब समानता और सामाजिक न्याय लाने के प्रयास भी साथ-साथ किए जाएँ। गुणवत्ता अपने आप में बहुस्तरीय एवं बहुआयामी अवधारणा है जिसके अंतर्गत बहुत से कार्यक्रम और कक्षायी व्यवस्थाएँ अंतर्निहित हैं। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में गुणवत्ता बच्चे को दिए जाने वाले सीखने-सिखाने के परिवेश के उन घटकों की ओर संकेत करती है जो बच्चों की शैक्षिक व सामाजिक क्षेत्र में सकारात्मक उपलब्धियों को उभार सके। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा की गुणवत्ता के जो दो मुख्य आयाम हैं, वे सीधे-सीधे कार्यक्रम के बुनियादी ढाँचे एवं सुविधाओं तथा बच्चों को कक्षा में दिए जाने वाले प्रत्यक्ष अनुभवों से संबंध रखते हैं।
- **राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख और शिक्षा (ई सी सी ई) नीति (2013)**
  महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने छ: वर्ष से कम आयु के सभी बच्चों के सर्वोत्तम विकास तथा सक्रिय अधिगम क्षमता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख और शिक्षा (ई सी सी ई) नीति (2013) को लागू किया है। यह नीति छ: वर्ष से कम आयु के सभी बच्चों को समावेशी, सामयिक तथा प्रासंगिक अवसर प्रदान करने के लिए बनाई गई है। इस नीति के द्वारा प्रत्येक बच्चे की देखरेख और प्रारंभिक अधिगम पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। इस नीति के मुख्य क्षेत्र हैं — समतापूर्ण पहुँच में समावेशन, ई सी सी ई, गुणवत्ता में सुधार क्षमता को सुदृढ़ करना, मानीटरिंग एवं पर्यवेक्षण, जागरूकता, अन्वेषण और प्रलेखीकरण। राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देख-रेख और शिक्षा नीति (2013) के अनुसार प्रत्येक ई सी सी ई कार्यक्रम जन्म से 3 वर्ष, 3 से 6 और 6 से 8 वर्ष की क्षमताओं, जो कि बच्चों की आवश्यकताओं, उनके परिवारों, उनकी भावनात्मक आवश्यकताओं, भाषायी संस्कृति और स्थानीय समुदायों पर आधारित है।
- **राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2013**
  राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2013 उपलब्ध कराता है विस्तृत दिशानिर्देशों को, जो आयु के बढ़ने के अनुसार उचित पाठ्यक्रमों पर आधारित है जिसमें स्थानीय आवश्यकताओं का ध्यान रखा गया है और साथ ही अनौपचारिक प्रारंभिक विद्यालयी शिक्षा को भी पर्याप्त स्थान दिया गया है जिससे बच्चों में जड़वत शिक्षा न उत्पन्न हो जाए।

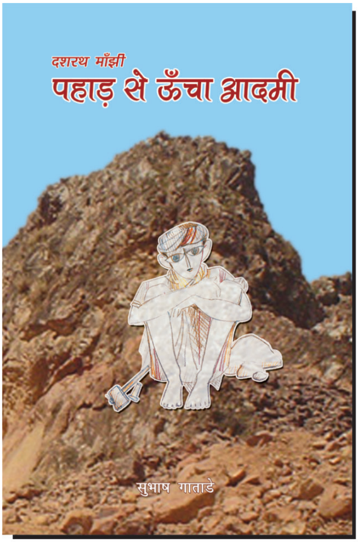

दशरथ माँझी
पहाड़ से ऊँचा आदमी
सुभाष गाताडे

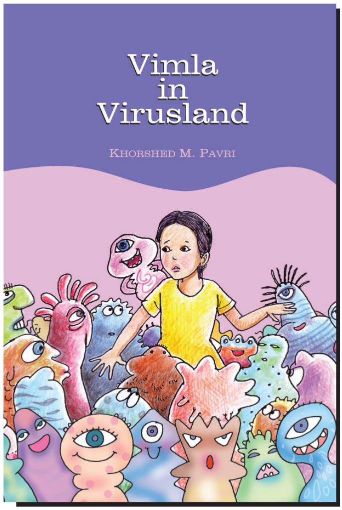

Vimla in Virusland
Khorshed M. Pavri
Rs. 75.00/pp 94

अधिक जानकारी के लिए कृपया www.ncert.nic.in देखिए अथवा कॉपीराइट पृष्ठ पर दिए गए पतों पर व्यापार प्रबंधक से संपर्क करें।

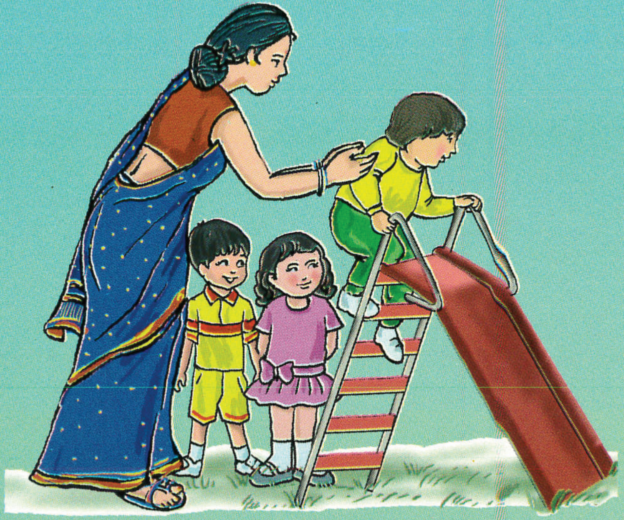

1545

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 81-7450-147-9